कृतज्ञता

ईश्वर से पूर्व मैं अपने पूज्यनीय पिता स्व० श्री राघवेन्द्र बाजपेयी तथा माँ स्व० श्रीमती शशि बाजपेयी जी के प्रति अपना आभार तथा स्नेह प्रकट करती हुँ, जिनके अथक प्रयासों व उनकें आर्शिवाद स्वरूप ही उनका सपना पूर्ण करने का प्रयास मेरे द्वारा किया जा रहा है, जो मेरे जीवन के परममित्र तथा मार्गदर्शक भी रहे है। उसके उपरान्त मैं ईश्वर को धन्यवाद करती हुँ, जिनकी अनुकम्पा द्वारा ही अपने माता–पिता के सपने को पूर्ण करने की शक्ति प्राप्त हो सकी।

साथ ही अपने गुरू का आभार प्रकट करती हुँ, जो मेरे वंदनिय मार्गदर्शक प्रो० राकेश जे० महीसुरी जी है, जिन्होनें समय–समय पर मेरा मार्ग प्रदर्शित कर सहायता प्रदान की। मैं तबला विभाग के अध्यक्ष प्रो० गौरंग भावसार जी का भी सह्रदय आभार प्रकट करती हुँ, जो मेरे लिए पितातुल्य है, जिन्होनें मेरे पिता के पश्चात् मेरा मार्गप्रदर्शित किया व मेरे मनोबल को टुटने नहीं दिया। मैं प्रो० गौरंग भावसार की सदैव ही आभारी रहुँगी। साथ ही फेकल्टी ऑफ परफोंमिंग आर्टस के डीन प्रो० राजेश केलकर जी की भी बहुत–बहुत आभारी हुँ, जिनके अर्शिवाद द्वारा ही इस फेकल्टी की विद्यार्थी बनने का सौभाग्य प्राप्त हो सका व इस परफोंमिंग आर्टस् के परिवार की सदस्य बन सकी।

इसके पश्चात् मैं अपने जम्मू स्थित ससुराल पक्ष का भी आभार प्रकट करती हुँ, जिनके सहयोग से इस शोधकार्य को सम्पन्न करने में सहायता प्राप्त हुयी, जिसमें मेरे ससुर श्री सुभाष चन्द्र जी तथा श्रीमती सुमन रानी जी के प्रति आभार प्रकाट करती हुँ तथा मेरी भाभी श्रीमति अनुराधा शर्मा तथा मेरे जेष्ठ श्री संकेत शर्मा का भी धन्यवाद करती हुँ। इन सभी में सबसे अधिक मैं मेरे पति डॉ० आकाशमान जी, जो इसी विभाग के पूर्व शोधार्थी रहे है, का ह्रदय से धन्यवाद करती हुँ, जिन्होनें में विषय के चयन से लेकर, इस शोध प्रबन्ध के मुद्रण तक तथा जीवन के भी प्रत्येक उतार–चढ़ाव में मेरा कदम–कदम पर सहयोग किया, जिसके लिए मैं सदैव आभारी रहुगीं। मैं मेरी बहनों सुश्री अक्षिता बाजपेयी व अंशिका बाजपेयी का भी धन्यवाद करती हुँ तथा अन्य सभी परिजनों का भी ह्रदय से धन्यवाद करती हुँ। साथ ही संकाय के सभी सहपाठियों तथा सहयोगियों का भी धन्यवाद करती हुँ।

इन सभी के उपरान्त संकाय के पुस्तकालय का भी धन्यवाद करती हुँ तथा पुस्तकालय में कार्यरत कोकिला मैड़म की भी आभारी हुँ, जिन्होनें समय–समय पर पुस्तकों के माध्यम से अपना सहयोग प्रदान किया। मैं शोध सम्बन्धित सभी पुस्तकों के लेखकों, ग्रन्थकारों, संगीतविदों का भी धन्यवाद करती हुँ। एक बार पुनः मैं प्रो० राकेश जे० महीसुरी, प्रो० गौरांग भावासार तथा प्रो० राजेश केलकर जी के प्रति मैं सदैव कृतज्ञ रहुँगी, जिन्होंनें मेरे माता–पिता के पश्चात् पिता के समान स्नेह तथा अर्शिवाद प्रदान किया, जिसका शब्दों के माध्यम से आभार प्रकट करना सम्भव ही नहीं है।

अन्त में इस शोध प्रबन्ध के कार्य को सम्पन्न करने में सहयोग प्रदान करने वाले प्रत्येक प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप में सम्मिलत रहें है, सभी का हृदय से धन्यवाद करतीं हुँ व सभी से शुभाशीष की कामना करती हुँ।

(आकांक्षा बाजपेयी)

****